Job

Chapter 38

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

וַיֹּאמַר׃	)הַסְּעָרָה(	מִ(ן)׀	]הסערה[	]מנ[	אִיּוֹב	אֶת־	יְהוָה	וַיַּעַן־	1
और-कहा	(आँधी)	(से)	[आँधी]	[से]	अय्यूब	को	यहोवा-ने	और-उत्तर-दिया	
H0559	H5591	H4480			H0347	H0853	H3068		

> फिर यहोवा ने तूफान में से अय्यूब को उत्तर दिया। परमेश्वर ने कहा:

דָּעַת׃	בְלִי־	בְמִלִּין	עֵצָה	מַחְשִׁיךְ	זֶה׀	מִי	2
ज्ञान	बिना	शब्दों-से	योजना-को	अंधेरा-करता-है	यह	कौन	
H1847	H1097	H4405	H6098	H2821	H2088	H4310	

> “यह कौन व्यक्ति है जो मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा है?”

וְהוֹדִיעֵנִי׃	וְאֶשְׁאָלְךָ	חֲלָצֶיךָ	כְגֶבֶר	נָא	אֱזָר־	3
और-बता-मुझे	और-मैं-पूछूँगा-तुझसे	अपनी-कमर	पुरुष-की-तरह	अब	बाँध	
H3045	H7592	H2504	H1397	H4994	H0247	

> अय्यूब, तुम पुरुष की भाँति सुदृढ़ बनों। जो प्रश्न मैं पूछूँ उसका उत्तर देने को तैयार हो जाओ।

בִינָה׃	יָדַעְתָּ	אִם־	הַגֵּד	אָרֶץ	בְּיָסְדִי־	הָיִיתָ	אֵיפֹה	4
समझ	तू-जानता-है	यदि	बता	पृथ्वी-की	मेरे-नींव-डालते-समय	था-तू	कहाँ	
H0998	H3045		H5046	H0776	H3245	H1961	H0375	

> अय्यूब, बताओ तुम कहाँ थे, जब मैंने पृथ्वी की रचना की थी यदि तू इतना समझदार है तो मुझे उत्तर दे।

קָו׃	עָלֶיהָ	נָטָה	מִי־	אוֹ	תֵדָע	כִּי	מְמַדֶּיהָ	שָׂם	מִי־	5
डोरी	उस-पर	तानी	किसने	या	तू-जानता-है	कि	उसके-माप	रखा	किसने	
		H5186	H4310		H3045		H4461		H4310	

> अय्यूब, इस संसार का विस्तार किसने निश्चित किया था किसने संसार को नापने के फीते से नापा

פִּנָּתָהּ׃	אֶבֶן	יָרָה	מִי־	אוֹ	הָטְבָּעוּ	אֲדָנֶיהָ	מָה	עַל־	6
उसके-कोने-का	पत्थर	रखा	किसने	या	गाड़ी-गई	उसकी-नींवें	क्या	पर	
H6438	H0068		H4310		H2883	H0134	H4100		

> इस पृथ्वी की नींव किस पर रखी गई है किसने पृथ्वी की नींव के रूप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्थर को रखा है

אֱלֹהִים׃	בְּנֵי	כָּל־	וַיָּרִיעוּ	בֹקֶר	כּוֹכְבֵי	יַחַד	בְּרָן־	7
परमेश्वर-के	पुत्र	सब	और-जयजयकार-करते-थे	भोर-के	तारों	एक-साथ	गाते-समय	
H0430		H3605	H7321	H1242	H3556			

> जब ऐसा किया था तब भोर के तारों ने मिलकर गया और स्वर्गदूत ने प्रसन्न होकर जयजयकार किया।

יֵצֵא׃	מֵרֶחֶם	בְּגִיחוֹ	יָם	בִּדְלָתַיִם	וַיָּסֶךְ	8
निकला	गर्भ-से	जब-फूटा	समुद्र-को	दरवाज़ों-से	और-बंद-किया	
H3318	H7358	H1518	H3220			

> “अय्यूब, जब सागर धरती के गर्भ से फूट पड़ा था, तो किसने उसे रोकने के लिये द्वार को बन्द किया था।

חֲתֻלָּתוֹ׃	וַעֲרָפֶל	לְבֻשׁוֹ	עָנָן	בְּשׂוּמִי	9
उसकी-लंगोट	और-घना-अंधकार	उसका-वस्त्र	बादल	मेरे-रखते-समय	
H2854	H6205	H3830	H6051		

> उस समय मैंने बादलों से समुद्र को ढक दिया और अन्धकार में सागर को लपेट दिया था (जैसे बालक को चादर में लपेटा जाता है।)

10

וָאֶשְׁבֹּר	עָלָיו	חֻקִּי	וָאָשִׂים	בְּרִיחַ	וּדְלָתָיִם׃
और-मैंने-ठहराया	उस-पर	मेरी-सीमा	और-मैंने-रखा	अर्गला	और-दरवाज़े
H7665		H2706		H1280	

सागर की सीमाऐं मैंने निश्चित की थीं और उसे ताले लगे द्वारों के पीछे रख दिया था।

11

וָאֹמַר	עַד־	פֹּה	תָבוֹא	וְלֹא	תֹסִיף	וּפֹא־	יָשִׁית	בִּגְאוֹן	גַּלֶּיךָ׃
और-मैंने-कहा	तक	यहाँ	तू-आएगा	और-नहीं	आगे	और-यहाँ	रुकेगा	घमंड-में	तेरी-लहरों-को
H0559	H5704	H6311	H0935	H3808	H3254	H6311	H7896	H1347	H1530

मैंने सागर से कहा, ‘तू यहाँ तक आ सकता है किन्तु और अधिक आगे नहीं। तेरी अभिमानी लहरें यहाँ तक रुक जायेंगी।’

12

הֲמִיָּמֶיךָ	צִוִּיתָ	בֹּקֶר	[ידעתה]	[שחר]	(יִדַּעְתָּה)	(הַשַּׁחַר)	מְקֹמוֹ׃
क्या-अपने-दिनों-से	तूने-आज्ञा-दी	भोर-को	[तूने-बताया]	[पौ]	(तूने-बताया)	(पौ-को)	उसका-स्थान
H3117	H6680	H1242	H3045	H7837	H3045	H7837	H4725

“अय्यूब, क्या तूने कभी अपनी जीवन में भोर को आज्ञा दी है उग आने और दिन को आरम्भ करने की

13

לֶאֱחֹז	בְּכַנְפוֹת	הָאָרֶץ	וְיִנָּעֲרוּ	רְשָׁעִים	מִמֶּנָּה׃
पकड़ने-को	कोनों-को	पृथ्वी-के	और-झाड़े-जाएं	दुष्ट	उससे
H0270	H3671	H0776	H5287	H7563	

अय्यूब, क्या तूने कभी प्रात: के प्रकाश को धरती पर छा जाने को कहा है और क्या कभी उससे दुष्टों के छिपने के स्थान को छोड़ने के लिये विवश करने को कहा है

14

תִּתְהַפֵּךְ	כְּחֹמֶר	חוֹתָם	וְיִתְיַצְּבוּ	כְּמוֹ	לְבוּשׁ׃
बदलती-है	मिट्टी-की-तरह	मुहर-के-नीचे	और-वे-खड़े-होते-हैं	जैसे	वस्त्र
H2015		H2368	H3320	H3644	H3830

प्रात: का प्रकाश पहाड़ों व घाटियों को देखने लायक बना देता है। जब दिन का प्रकाश धरती पर आता है तो उन वस्तुओं के रूप वस्त्र की सलवटों की तरह उभर कर आते हैं। वे स्थान रूप को नम मिट्टी की तरह जो दबोई गई मुहर की ग्रहण करते हैं।

15

וְיִמָּנַע	מֵרְשָׁעִים	אוֹרָם	וּזְרוֹעַ	רָמָה	תִּשָּׁבֵר׃
और-रोका-जाता-है	दुष्टों-से	उनका-प्रकाश	और-भुजा	ऊँची	टूटेगी
H4513	H7563	H0216	H2220		H7665

दुष्ट लोगों को दिन का प्रकाश अच्छा नहीं लगता क्योंकि जब वह चमचमाता है, तब वह उनको बुरे काम करने से रोकता है।

16

הֲבָאתָ	עַד־	נִבְכֵי־	יָם	וּבְחֵקֶר	תְּהוֹם	הִתְהַלָּכְתָּ׃
क्या-तूने-प्रवेश-किया	तक	स्रोतों	समुद्र-के	और-खोज-में	गहराई-की	तूने-चला
H0935	H5704	H5033	H3220	H2714	H8415	H1980

“अय्यूब, बता क्या तू कभी सागर के गहरे तल में गया है? जहाँ से सागर शुरु होता है क्या तू कभी सागर के तल पर चला है?

17

הֲנִגְלוּ	לְךָ	שַׁעֲרֵי־	מָוֶת	וְשַׁעֲרֵי	צַלְמָוֶת	תִּרְאֶה׃
क्या-प्रकट-हुए	तुझे	फाटक	मृत्यु-के	और-फाटक	मृत्यु-की-छाया-के	तूने-देखे
H1540		H8179	H4194	H8179	H6757	H7200

अय्यूब, क्या तूने कभी उस फाटकों को देखा है, जो मृत्यु लोक को ले जाते हैं? क्या तूने कभी उस फाटकों को देखा जो उस मृत्यु के अन्धेरे स्थान को ले जाते हैं?

18

הִתְבֹּנַנְתָּ	עַד־	רַחֲבֵי־	אָרֶץ	הַגֵּד	אִם־	יָדַעְתָּ	כֻלָּהּ׃
क्या-तूने-समझा	तक	चौड़ाई	पृथ्वी-की	बता	यदि	तू-जानता-है	उसे-सब
H0995	H5704	H7338	H0776	H5046		H3045	H3605

अय्यूब, तू जानता है कि यह धरती कितनी बड़ी है? यदि तू ये सब कुछ जानता है, तो तू मुझकों बता दे।

19

אֵי־	זֶה	הַדֶּרֶךְ	יִשְׁכָּן־	אוֹר	וְחֹשֶׁךְ	אֵי־	זֶה	מְקֹמוֹ׃
कहाँ	यह	मार्ग	रहता-है	प्रकाश	और-अंधकार	कहाँ	यह	उसका-स्थान
H0335	H2088	H1870	H7931	H0216	H2822	H0335	H2088	H4725

“अय्यूब, प्रकाश कहाँ से आता है? और अन्धकार कहाँ से आता है?

20								
	כִּי	תִקָּחֶנּוּ	אֶל־	גְּבוּלוֹ	וְכִי־	תָבִין	נְתִיבוֹת	בֵּיתוֹ׃
	कि	तू-उसे-ले-जाए	तक	उसकी-सीमा	और-कि	तू-समझता-है	पथ	उसके-घर-के
		H3947	H0413	H1366		H0995		

अय्यूब, क्या तू प्रकाश और अन्धकार को ऐसी जगह ले जा सकता है जहाँ से वे आये है जहाँ वे रहते हैं? वहाँ पर जाने का मार्ग क्या तू जानता है?

21							
	יָדַעְתָּ	כִּי־	אָז	תִּוָּלֵד	וּמִסְפַּר	יָמֶיךָ	רַבִּים׃
	तू-जानता-है	कि	तब	तू-जन्मा-था	और-गिनती	तेरे-दिनों-की	बहुत-है
	H3045			H3205	H4557	H3117	

अय्यूब, मुझे निश्चय है कि तुझे सारी बातें मालूम हैं? क्योंकि तू बहुत ही बूढ़ा और बुद्धिमान है। जब वस्तुऐं रची गई थी तब तू वहाँ था।

22							
	הֲבָאתָ	אֶל־	אֹצְרוֹת	שָׁלֶג	וְאֹצְרוֹת	בָּרָד	תִּרְאֶה׃
	क्या-तूने-प्रवेश-किया	तक	भण्डार	बर्फ़-के	और-भण्डार	ओले-के	तूने-देखे
	H0935	H0413	H0214	H7950	H0214	H1259	H7200

“अय्यूब, क्या तू कभी उन कोठियारों में गया हैं? जहाँ मैं हिम और ओलों को रखा करता हूँ

23							
	אֲשֶׁר־	חָשַׂכְתִּי	לְעֶת־	צָר	לְיוֹם	קְרָב	וּמִלְחָמָה׃
	जो	मैंने-रखे-हैं	समय-के-लिए	संकट-के	दिन-के-लिए	युद्ध	और-लड़ाई-के
		H2820	H6256		H3117	H7128	H4421

मैं हिम और ओलों को विपदा के काल और युद्ध लड़ाई के समय के लिये बचाये रखता हूँ।

24									
	אֵי־	זֶה	הַדֶּרֶךְ	יֵחָלֶק	אוֹר	יָפֵץ	קָדִים	עֲלֵי־	אָרֶץ׃
	कहाँ	यह	मार्ग	बँटता-है	प्रकाश	फैलती-है	पूर्वी-हवा	पर	पृथ्वी
	H0335	H2088	H1870		H0216		H6921		H0776

अय्यूब, क्या तू कभी ऐसी जगह गया है, जहाँ से सूरज उगता है और जहाँ से पुरवाई सारी धरती पर छा जाने के लिये आती है

25							
	מִי־	פִלַּג	לַשֶּׁטֶף	תְּעָלָה	וְדֶרֶךְ	לַחֲזִיז	קֹלוֹת׃
	किसने	बनाया	बाढ़-के-लिए	नाली	और-मार्ग	गरज-के-लिए	आवाज़ों-की
	H4310	H6385	H7858		H1870	H2385	

अय्यूब, भारी वर्षा के लिये आकाश में किसने नहर खोदी है, और किसने भीषण तूफान का मार्ग बनाया है

26									
	לְהַמְטִיר	עַל־	אֶרֶץ	לֹא־	אִישׁ	מִדְבָּר	לֹא־	אָדָם	בּוֹ׃
	बरसाने-को	पर	भूमि	नहीं	आदमी	जंगल	नहीं	मनुष्य	उसमें
	H4305		H0776	H3808	H0376		H3808	H0120	

अय्यूब, किसने वहाँ भी जल बरसाया, जहाँ कोई भी नहीं रहता है

27						
	לְהַשְׂבִּיעַ	שֹׁאָה	וּמְשֹׁאָה	וּלְהַצְמִיחַ	מֹצָא	דֶשֶׁא׃
	तृप्त-करने-को	उजाड़	और-वीरान	और-उगाने-को	उगाव	घास-का
	H7646		H4875	H6779	H4161	H1877

वह वर्षा उस खाली भूमि के बहुतायत से जल देता है और घास उगनी शुरु हो जाती है।

28								
	הֲיֵשׁ־	לַמָּטָר	אָב	אוֹ	מִי־	הוֹלִיד	אֶגְלֵי־	טָל׃
	क्या-है	वर्षा-के-लिए	पिता	या	किसने	जन्म-दिया	बूँदों-को	ओस-की
	H3426	H4306	H0001		H4310	H3205	H0096	H2919

अय्यूब, क्या वर्षा का कोई पिता है ओस की बूँदे कहाँ से आती हैं

29								
	מִבֶּטֶן	מִי	יָצָא	הַקָּרַח	וּכְפֹר	שָׁמַיִם	מִי	יְלָדוֹ׃
	गर्भ-से	किसने	निकला	बर्फ़	और-पाला	आकाश-का	किसने	जन्म-दिया-उसे
	H0990	H4310	H3318	H7140		H8064	H4310	H3205

अय्यूब, हिम की माता कौन है आकाश से पाले को कौन उत्पन्न करता है

30

כָּאֶבֶן	מַיִם	יִתְחַבָּאוּ	וּפְנֵי	תְהוֹם	יִתְלַכָּדוּ׃
पत्थर-की-तरह	पानी	छिपा-रहता-है	और-सतह	गहराई-की	जम-जाती-है
H0068	H4325	H2244	H6440	H8415	H3920

पानी जमकर चट्टान सा कठोर बन जाता है, और सागर की ऊपरी सतह जम जाया करती है।

31

הֲתְקַשֵּׁר	מַעֲדַנּוֹת	כִּימָה	אוֹ־	מֹשְׁכוֹת	כְּסִיל	תְּפַתֵּחַ׃
क्या-तू-बाँध-सकता-है	बंधन	कृत्तिका-के	या	डोरियाँ	मृगशिरा-की	तू-खोल-सकता-है
H7194	H4575	H3598		H4189	H3685	

“अय्यूब, सप्तर्षि तारों को क्या तू बाँध सकता है क्या तू मृगशिरा का बन्धन खोल सकता है

32

הֲתֹצִיא	מַזָּרוֹת	בְּעִתּוֹ	וְעַיִשׁ	עַל־	בָּנֶיהָ	תַנְחֵם׃
क्या-तू-निकाल-सकता-है	नक्षत्रों	उनके-समय-पर	और-सप्तर्षि	पर	उसके-पुत्रों	तू-मार्गदर्शन-करता-है
H3318	H4216	H6256	H5906			H5148

अय्यूब, क्या तू तारा समूहों को उचित समय पर उगा सकता है, अथवा क्या तू भालू तारा समूह की उसके बच्चों के साथ अगुवाई कर सकता है

33

הֲיָדַעְתָּ	חֻקּוֹת	שָׁמָיִם	אִם־	תָּשִׂים	מִשְׁטָרוֹ	בָאָרֶץ׃
क्या-तू-जानता-है	विधियों	आकाश-की	या	तू-रखता-है	उसका-शासन	पृथ्वी-पर
H3045	H2708	H8064			H4896	H0776

अय्यूब क्या तू उन नियमों को जानता है, जो नभ का शासन करते हैं क्या तू उन नियमों को धरती पर लागू कर सकता है

34

הֲתָרִים	לָעָב	קוֹלֶךָ	וְשִׁפְעַת־	מַיִם	תְּכַסֶּךָּ׃
क्या-तू-ऊँचा-कर-सकता-है	बादलों-तक	अपनी-आवाज़	और-बहुतायत	पानी-की	तुझे-ढके
	H5645		H8229	H4325	H3680

“अय्यूब, क्या तू पुकार कर मेघों को आदेश दे सकता है, कि वे तुझको भारी वर्षा के साथ घेर ले।

35

הַתְשַׁלַּח	בְּרָקִים	וְיֵלֵכוּ	וְיֹאמְרוּ	לְךָ	הִנֵּנוּ׃
क्या-तू-भेज-सकता-है	बिजलियों-को	और-वे-जाएं	और-वे-कहें	तुझे	यहाँ-हम
H7971		H3212	H0559		H2009

अय्यूब बता, क्या तू बिजली को जहाँ चाहता वहाँ भेज सकता है और क्या तेरे निकट आकर बिजली कहेगी, “अय्यूब, हम यहाँ है बता तू क्या चाहता है”

36

מִי־	שָׁת	בַּטֻּחוֹת	חָכְמָה	אוֹ	מִי־	נָתַן	לַשֶּׂכְוִי	בִינָה׃
किसने	रखी	अंतर-भागों-में	बुद्धि	या	किसने	दी	मन-को	समझ
H4310	H7896	H2910	H2451		H4310	H5414	H7907	H0998

“मनुष्य के मन में विवेक को कौन रखता है, और बुद्धि को कौन समझदारी दिया करता है

37

מִי־	יְסַפֵּר	שְׁחָקִים	בְּחָכְמָה	וְנִבְלֵי	שָׁמַיִם	מִי	יַשְׁכִּיב׃
कौन	गिन-सकता-है	बादलों-को	बुद्धि-से	और-मशकें	आकाश-की	कौन	उंडेल-सकता-है
H4310		H7834	H2451		H8064	H4310	H7901

अय्यूब, कौन इतना बलवान है जो बादलों को गिन ले और उनको वर्षा बरसाने से रोक दे

38

בְּצֶקֶת	עָפָר	לַמּוּצָק	וּרְגָבִים	יְדֻבָּקוּ׃
उंडेलते-समय	धूल	ढलाई-में	और-ढेले	चिपक-जाते-हैं
H3332	H6083	H4165	H7263	H1692

वर्षा धूल को कीचड़ बना देती है और मिट्टी के लौंदे आपस में चिपक जाते हैं।

39

הֲתָצוּד	לְלָבִיא	טָרֶף	וְחַיַּת	כְּפִירִים	תְּמַלֵּא׃
क्या-तू-शिकार-कर-सकता-है	सिंहनी-के-लिए	शिकार	और-जीवन	जवान-सिंहों-का	तू-भर-सकता-है
		H2964			H4390

“अय्यूब, क्या तू सिंहनी का भोजन पा सकता है क्या तू भूखे युवा सिंह का पेट भर सकता है

40

כִּי־	יָשֹׁחוּ	בַמְּעוֹנוֹת	יֵשְׁבוּ	בַסֻּכָּה	לְמוֹ־	אָרֶב׃
जब	वे-झुकते-हैं	माँदों-में	बैठते-हैं	झाड़ी-में	के-लिए	घात
	H7817	H4585	H3427	H5521	H3926	H0695

> वे अपनी खोहों में पड़े रहते हैं अथवा झाड़ियों में छिप कर अपने शिकार पर हमला करने के लिये बैठते हैं।

41

מִי	יָכִין	לָעֹרֵב	צֵידוֹ	כִּי־	[ילדו]	(יְלָדָיו)	אֶל־	אֵל
कौन	तैयार-करता-है	कौए-के-लिए	उसका-शिकार	जब	[उसके-बच्चे]	(उसके-बच्चे)	की-ओर	परमेश्वर
H4310		H6158			H3206	H3206	H0413	H0410
יְשַׁוֵּעוּ	יִתְעוּ	לִבְלִי־	אֹכֶל׃					
पुकारते-हैं	भटकते-हैं	बिना	भोजन					
H7768	H8582	H1097	H0400					

> अय्यूब, कौवे के बच्चे परमेश्वर की दुहाई देते हैं, और भोजन को पाये बिना वे इधर—उधर घूमतें रहते हैं, तब उन्हें भोजन कौन देता है